मक्का की खेती

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र
सेवनियां, जिला – सीहोर (म.प्र.)

खाद्यान्न फसलों में मक्का का विशेष स्थान है। मक्का का उत्पादन की दृष्टि से गेहूँ व धान के बाद तीसरा स्थान है। मक्का अनाज, दाना एवं चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। वर्तमान समय मक्का की विभिन्न प्रजातियों को अलग – अलग तरह से उपयोग में लाया जा रहा है, जैसे – पापकॉर्न, स्वीटकार्न, ग्रीनकार्न, बेबीकार्न आदि। जहॉ बेबीकार्न को सब्जी के रूप में उपयोग किया जा रहा है, वहीं स्वीटकार्न को उबालकर नाश्ते के रूप में उपयोग किया जाता है। हरे भुट्टों को भूनकर खाने का स्वाद अवर्णनीय है। पापकार्न को आज हर जगह बच्चों, बुजुर्गों को खाते हुए देखा जा रहा हैं।

भूमि का चुनाव :– मक्का की खेती उचित मृदा प्रबन्धन द्वारा विभिन्न प्रकार की भूमियों में की जा सकती है किन्तु अधिक उत्पादन हेतु अधिक जीवांश युक्त, अच्छे जल निकास व वायु संचार युक्त दोमट मृदा उपयुक्त होती है।

जलवायु :– मक्का की अच्छी बढवार हेतु अच्छी धूप की आवश्यकता होती है। बुवाई के समय वायुमण्डल का तापक्रम 18–20° C होना चाहिए। यदि तापक्रम 9–10° C होता है तो मक्का का अंकुरण प्रभावित होता है। मक्का की बढवार हेतु 25–30° C तापक्रम उपयुक्त होता है। गर्म व शुष्क वातावरण पकते समय ठीक रहता है।

भूमि की तैयारी :– 2–3 बार बक्खर चलाकर भूमि को भुरभुरी एवं आवश्यकता अनुसार पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए।

बीज की मात्रा :– बीज की मात्रा, प्रजाति व उपयोग के आधार निम्नानुसार है–

संकुल मक्का के लिए – 6 से 7 किग्रा./एकड
संकर मक्का के लिए – 8 से 10 किग्रा./एकड
पॉपकार्न के लिए – 5 से 6 किग्रा./एकड
हरे चारे के लिए – 16 से 18 किग्रा./एकड

प्रजातियॉ :-

चारे हेतु – अफ्रीकन टाल, जे. – 1006

स्वीटकार्न – माधुरी, प्रिया।

पॉपकार्न – अम्बर पॉप, अम्बर, पर्ल पॉपकार्न।

बेबी कार्न – बी. एल. – 42, प्रकाश, पूसा संकर – 1, 2 व 3।

अनाज हेतु – एच.क्यू.पी.एम.–1,4, गंगा–2 व जे.एम.–216।

बीजोपचार :-

फफूँदनाशक – कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम + थायरम 2 ग्राम या ट्रायकोडर्मा 5 ग्राम या ट्रायकोडर्मा 4 ग्राम + कार्बोक्सिन 1 ग्राम प्रति किग्रा. बीज उपचार।

कीटनाशक – थायोमिथाक्जॉम 70 डब्ल्यू. एस. की 3 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा. बीज उपचार।

जैव उर्वरक – राईजोबियम व पी. एस. बी. कल्चर की 5–5 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा. बीज उपचार।

दीमक के प्रकोप वाले क्षेत्रों में क्लोरोपाईरीफॉस दवा की 5 मिली. मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार करें या क्लोरोपाईरीफॉस पावडर 6–8 किग्रा. का प्रति एकड़ की दर से बुवाई के अन्तिम बखरनी से पूर्व मिट्टी में मिलायें ।

नोट– बीज उपचार के समय ध्यान रहे कि सबसे पहले फफूँदनाशक, फिर कीटनाशक एवं अंत मे जैव उर्वरको से बीज उपचार किया जावे।

बुवाई का समय :-

खरीफ ऋतु में – जून के अन्तिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक।

रबी ऋतु में – अक्टूबर का द्वितीय पखवाडा।

जायद ऋतु में – मार्च का द्वितीय पखवाडा।

बुवाई का तरीका :-

- बुवाई सदैव पंक्तियों में करना चाहिए। सामान्यतः मक्के की बुवाई 50 – 60 सेमी. पंक्ति से पंक्ति व 20 – 30 सेमी. पौध से पौध की दूरी पर करें।
- बीज को 3.5 से 5.0 सेमी. की गहराई पर बुवाई करें।

खाद एवं उर्वरक :- बुवाई से पूर्व 4 – 6 टन / प्रति एकड की दर से गोबर की खाद का उपयोग करना चाहिए।

उर्वरक प्रबन्धन :-

प्रजाति	नाईट्रोजन (किग्रा. / एकड)	फास्फोरस (किग्रा. / एकड)	पोटाश (किग्रा. / एकड)
संकर	40 – 50	24	16
संकुल	30 – 40	12 –24	08
स्वीटकार्न	40 – 50	24	16
बेबीकार्न	60	24	16
पॉपकार्न	30 – 40	24	16

अन्त; शस्य क्रियायें :- बुवाई के 15 – 20 एवं 35 – 40 दिन बाद खेत में डोरा चलाना जरूरी है। डोरा चलाने के तुरन्त बाद निंदाई करने से मिट्टी में दबे पौधे को निकालना एवं खेत नींदा रहित करना चाहिए। पहली गुडाई के तुरन्त बाद पौध विरलन कार्य करना चाहिए। जिससे पौधे वांछित संख्या में समुचित वृद्धि कर सके।

सिंचाई :- मक्का में पानी की कमी नही होने देना चाहिए, विशेष तौर पर मंजरी एवं बाली निकलने का समय महत्वपूर्ण होता है। बुवाई से लेकर भुटटा निकलने तक मौसम के अनुसार चार सिंचाई की आवश्यकता होती है, प्रत्येक सिंचाई में 5 सेमी. जल पर्याप्त होता है।

पौध संरक्षण – प्रमुख कीट व उनका प्रबन्धन

तना भेदक :- इस कीट की सूडियॉ तने को अन्दर ही अन्दर छेद करके खाती है जिसके कारण मृत गोभ बन जाता है व पौधा धीरे – धीरे सूख जाता है।

प्रबन्धन :- इसकी रोकथाम हेतु फोरेट 10 जी की 5–6 किग्रा. का प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें।

प्ररोह मक्खी :- यह कीट पौधे के मध्य प्ररोह में घुसकर पौधे को हानि पहुँचाता है। प्रारम्भिक अवस्था में इस कीट द्वारा सर्वाधिक क्षति पहुँचती है।

प्रबन्धान :- इसकी रोकथाम हेतु फास्फोमिडान 85 ईसी की 0.5 मिली मात्रा को /लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

माहू :- हरे रंग के छोटे – छोटे कीट पत्तियों एवं नर मंजरियों का रस चूसते है। जिससे पौधे कमजोर हो जाते है।

प्रबन्धान :- इसकी रोकथाम हेतु इमिडाक्लारोप्रिड 17.8 एस. एल. की 50 – 60 मिली. मात्रा का प्रति एकड की दर से छिडकाव करें।

दीमक :- यह कीट पौधो को जमीन के नीचे से काटकर सुखा देते है तथा रात्रि के समय अधिक सक्रिय होती है।

प्रबन्धन:- क्लोरोपायरीफॉस की 5 मिली. मात्रा से प्रति कि.ग्रा बीज का उपचार करे। क्लोरोपाइरीफॉस दवा की 6 किग्रा मात्रा प्रति एकड की दर से मृदा उपचार करें।

प्रमुख रोग व उनका प्रबन्धन

झुलसा रोग :- पत्तियों पर भूरे–कत्थई रंग के धब्बे बनते है, जिस कारण पौधा झुलसा हुआ दिखाई देता है।

प्रबन्धान :- कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम या मैनकोजेब 3 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

मोजेक :- इस रोग के कारण पत्तियॉ चितकबरी दिखाई देती हैं व पौधे की बढवार रूक जाती है।

प्रबन्धन :- इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस. एल. की 50 – 60 मिली. मात्रा का प्रति एकड की दर से छिडकाव करें।

-:प्रकाशक:-

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

फोन - 07561-281834, ई-मेल : crdekvksehore@gmail.com